Sagar Dharmamrut

Folder No.	022362
Granth Name	Sagar Dharmamrut
Author	Ashadhar Pandit, Lalaram Jain
Publisher	Digambar Jain Pustakalay
Edition	1
Year	1915
Pages	362

सागार धर्मामृत

फोल्डर नं.	०२२३६२
ग्रन्थ	सागार धर्मामृत
लेखक	आशाधर पंडित, लालाराम जैन
प्रकाशक	दिगम्बर जैन पुस्तकालय
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	१९१५
पृष्ठ	३६२

मुख्य टाइटल
शुद्धिपत्रक
पंडितप्रवर आशाधर जी का परिचय---------- १
विषयानुक्रमणिका ---------- २८
प्रथम अध्याय---------- १
टीकाकारका मंगलाचरण ---------- १
सम्यग्दर्शन की कारणसामग्री ---------- ९
सागारधर्मको पालनक रनेवाले गृहस्थका लक्षण ---------- १६
पूर्ण सागार धर्म---------- ३२
ग्यारह प्रतिमाओंके नाम ---------- ४३
श्रावक के पाक्षिकादि तीन भेद ---------- ५३
दूसरा अध्याय ---------- ५४
सागारधर्म को स्वीकार करने योग्य भव्य पुरुषका लक्षण ---------- ५४
विशुद्ध आचरणों का घमंड करते हुये भी मांस भक्षण करनेवालोंकी निंदा ---------- ६४
पांचों उदंबरों के खाने में दोनों प्रकार की हिंसा का निरूपण ---------- ७५
मिथ्यात्वको छोड़कर जैनधर्म धारण करने की विधि और धारण करनेवाले की प्रशंसा ---------- ८६
नित्यमहका स्वरूप ---------- ९७
स्नानकर पूजा करना, यदि स्नान न किया हो तो दूसरे से कराना ---------- १०७
सिद्ध साधु और धर्म की पूजा का उपदेश ---------- ११७
जैनियों पर अनुग्रह करने का उपदेश ---------- १२७
गृहस्थों को विवाह करने का उपदेश ---------- १३९
मुनियोंको कैसा दान देना चाहिये ---------- १५३
व्रतका लक्षण ---------- १६५
तीसरा अध्याय ---------- १७६

नैष्ठिकका लक्षण ---------- १७६
मद्य आदिके व्यापारका निषेध ---------- १८९
चौर्यव्यसनत्यागव्रतके अतिचार ---------- १९९
पुत्रके विना आगेकी प्रतिमाओंके होनेकी कठिनता ---------- २०८
चौथा अध्याय ---------- २११
व्रत प्रतिमाका लक्षण ---------- २११
उत्सर्गरूप अङिंसाणुव्रतका लक्षण---------- २२५
फिर इसी विषयका समर्थन ---------- २४२
उदाहरण देकर रात्रिभोजनके दोषका महान्यना ---------- २५३
किस समय मौन धारण करना और उसका फल ---------- २६३
अचौर्याणुव्रतका लक्षण ---------- २७६
अब्रह्मके दोष ---------- २८९
अंतरंग परिग्रहके त्याग करने का उपाय ---------- ३०२
अणुव्रतियोंका प्रभाव ---------- ३१२